अंजोरिया

साल - 1 : अंक - 5 अगहन
अंजोरिया 2060/दिसम्बर 2003

एह अंक में :

सम्पादक के आलेख	डा. राजेन्द्र भारती	2
महर्षि भृगुमुनि आ ददरी के मेला..	दयानन्द मिश्र नन्दन	3
विकास माने हाफ पैंट	डा. दिनेश प्रसाद शर्मा	5
बाटे क दिन के ई जिनिगी	डा.बृजेन्द्र सिंह बैरागी	8
मगन किसान बाड़ें	शम्भुनाथ उपाध्याय	8
लोरी	सुरेश कांटक	9
गीत	देव कुमार सिंह	10
के हइ लक्ष्मी	अजय कुमार काश्यप	

सम्पादक के कलम

भोजपुरी के भलाई खातिर

डा. राजेन्द्र भारती

आजु-काल्हु भोजपुरी के नांव पर जगहे-जगह सम्मेलन, गोष्ठी के आयोजन के चलन बढ़ि गईल बा। गोष्ठी, सम्मेलन त 'भोजन' के बाद खतम हो जात बा, बाकिर भोजपुरी जहां के तहां बा। विकास भा बढ़न्ती कतहूं नईखे लउकत।

भोजपुरी के भलाई नांव पर आपन नांव उछाले में लोग लागल बा. अभी एही साले फरवरी में दूगो बड़हन सम्मेलन भईल। एगो अखिल भारतीय सम्मेलन बिहार में आ एगो विश्व सम्मेलन कलकत्ता में। दूनो जगह आयोजक / प्रायोजक लोग बांहि पूजवावे में रहि गईलन। एको दिन संसद में एहकर गूंज ना उठ पावल।

भोजपुरी के शुभेच्छु लोगन के चाहीं कि भोजपुरी के पुस्तकालय अपना-अपना नगर, गांव में खोलस। भोजपुरी के पत्रपत्रिकन आ किताबन के पढ़े के चाव लोगन में जगावसु. भोजपुरी में रचनिहारन के उछाह बढ़ावसु। लोकगीतन का नांव पर छिछिला स्तर के आडियो, विडियो, सीडी, कैसेट ओगैरह के नकारे के आन्दोलन खड़ा करसु।

भोजपुरी के मान प्रतिष्ठा खातिर सबके एक होके, एक मंच से भोजपुरी के अलख जगावे के पड़ी। भोजपुरिया क्षेत्र के सांसदन आ विधायकन के चेतावे के पड़ी कि भोजपुरी के मान सम्मान के लड़ाई ओह लोगन के लड़हीं के पड़ी। भोजपुरी के बोलवईया कम नईखन. एहसे कम बोलवईयन के कईगो भाषन के आठवीं सूची मे जगहा मिल गईल बाकिर भोजपुरी आजु ले मान्यता खातिर तरसत बा। संसद आ विधानसभा में भोजपुरी के लड़ाई चलावल जरूरी बा। जवन सांसद आ विधायक एह खातिर तैयार हो खसु उहे लोग हमनी के वोटन के हकदार हो सकेला।

भोजपुरी भाषा के व्याकरण भा एकरूपता के बाति बतियावे वाला लोगन के सतरहंवी शताब्दी में अंगरेजी के इतिहास देखावल जरूरी बा। जइसे जइसे भोजपुरी में लिखनिहार पढ़निहार बढ़िहन ओइसंही भोजपुरी के एकरूपता बढ़ि। एहसे भोजपुरी साहित्य के मान सम्मान बढ़ावल जरूरी बा।

आकाशवाणी आ दूरदर्शन पर भोजपुरी में प्रसारण बढ़ावल जरूरी बा। साथहीं इहो देखल जरूरी बा कि ओह प्रसारण में सही भोजपुरी होखो, भोजपुरी का नांव पर चटकलिहा बोली ना. एह खातिर भोजपुरिहा लिखनिहार लोग के आगे आके कमान सम्हाले के पड़ी। मुंह फुलवला से काम नईखे चले वाला।

कदम चौराहा, बलिया - 277001

पर्यटन विषयक लेख

महर्षि भृगुमुनि आ ददरी के मेला

दयानन्द मिश्र नन्दन

आजु जवन मनवन्तर चलि रहल बा तवना के नाम बैवस्वत मनवन्तर ह। ई सातवां मनवन्तर ह। एकरा पहिले सिलसिलेवार से स्वायम्भुव, स्वरारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, आ चाक्षुष मनवन्तर रहे। छठवां मनवन्तर चाक्षुष में सातगो तपोनिष्ठ ऋषि - भृगु, नभ, विवस्वान, सुधामा, बिरजा, अतिनामा, आ सहिष्णु - रहलन। एहि सात जाना पर 'सप्तऋषि' नाम धराईल। ओईसे त बहुते ऋषि रहलन बाकिर योगबल, तपबल, साधबल, भा यज्ञबल मेंएहलोग के स्थान बहुत उपर रहुवे। एहू सात ऋषियन में महर्षि भृगु के नाम पहिलका रहे।एह लेख में हम ओही भृगु ऋषि के चरचा करे जात बानी।

छठवां मनवन्तर चाक्षुष के शुरूआत हो गइल रहे। नाना तरह के विघिन डाले वाला रा क्षसन के उतपात खूबहोत रहे. हर प्रकार से, हर तरह से राक्षस आपन प्रभाव देखा के धरम के काम पूरा ना होखे देसु। जगह जगह ऋषि मुनि लोग के परेशानी बढ़ल जात रहे। अपना अपना योगबल से राक्षसन के परभाव कम करत कवनो तरह से ऋषि लोग के यज्ञ पूरा होत रहे। ऋषि मुनि लोग के जियरा बड़ा सांसत में पड़ल रहे। उ लोग कवनो तरह से आपन यज्ञ पूरा करे।

जेकर हाथ पैर आ मन काबू में रहेला आ जेकरा में विद्या, तप, आ कीर्ति के समावेश भरपूर रहेला उ धरती पर नाना तरह के बिघनन के सामना कर के भी आपन काम बढ़िया तरह से पूरा करत, सतकरम करत आगे बढ़त जाला। भृगु ऋषि में भी सब गुण भरल रहे। उनकरा अन्दर विद्या, तप आ कीर्ति के उर्जा भरल रहे।

जे सैकड़न साल हवा पी के, एक पैर पर खड़ा होके, दूनो हाथ उपर उठा के तपस्या में लीन रह सकेला उ कठिन से कठिन संकल्प के भी पूरा कर सकेला। भृगु ऋषि अइसने रहलन। तबेनू सातो ऋषियन में पहिला नाम उनकरे बा।

ओह घरी विष्णु भगवान के पूजा सब केहू बड़ा नेह लगाके करत रहे। उहे भगवान विष्णु एकदिन मां लक्ष्मी के साथ क्षीर सागर में सुतल रहलन। मां लक्ष्मी भगवान विष्णु के गोड़ दबावत रहली। ओहि समय भृगु ऋषि खिसियात ओहिजा पंहुचलन। उनका एह बात के खीस रहे कि विष्णु उनकर एगो आदेश ना मनले रहलन। पंहुचते उ विष्णु भगवान के छाती पर लात जमवलन। विष्णु भगवान के नींद टूट गईल आ उ भृगु ऋषि के चरण पकड़ के कहलन कि हे मुनिवर, कहीं हमरा पत्थर ले खा छाती से रउरा कमलवत चरण के बड़ा चोट पंहुचल होखी। आंई सुघरा दीं।

भगवान विष्णु के अतना कहते ऋषि के आंख खुली गइल। परदा हटि गइल। अज्ञानता के नाश हो गइल। ज्ञान के प्रकाश पड़तहीं ऋषिवर दूनू हाथ जोड़िके भगवान विष्णु के चरण पर गिरि पड़लन. कहलन कि हे प्रभो! हमरा से बहुत बड़ अपराध हो गइल। ई अपराध अज्ञानतावश भईल बा। हमार अपराध के रउरा क्षमा कर दीं।

रहिम के शब्दन में देखीं : ''क्षमा बड़न को चाहिये छोटन के अपराध, क्या घट गया रहीम का जो भृगु मारी लात ?'' भगवान विष्णु भृगुमुनि के समझवलन आ एगो कईन के लकड़ी देके कहलन कि गंगा किनारे चलत चल जा। जहवां सांझ हो जाव रुक जईह। एह कोईन के लकड़ी गाड़ दीह। भोरे होखला पर जहां ई कोईन हरिअर हो जाव ओहिजा तू आपन आसन जमा दीह आ तपस्या करीह। तू बहुत बड़ यश केभागी बन ब।

महर्षि भृगुजी ओह लकड़ी के लेके चलि दीहले। चलत चलत राहे में एगो तपस्वी से भेंट हो गइल। ओह तपस्वी के नाम दरदर मंनि रहे। दरदर मुनि अपना से महान तपस्वी से भेंट भइला पर बहुत खुश भइलें आ भृगुजी से अपना के शिष्य बनावे खातिर निहोरा कइलें। बहुत निहोरा पर आ मन, वचन, कर्म से पवित्र समुझि के दरदर मुनि के आपन शिष्य बना लिहलें। अब दूनो जना गुरू शिष्य फेर गंगा के किनारे किनारे चल दिहलें अपना यात्रा पर। चलत चलत बलिया नगरी में गंगा के तट पर रात हो गइल। सूखल लकड़ी गाड़ के गुरू शिष्य स्नान, संध्या, वंदन कर के सूत गइल लोग। भोरे जगला पर आश्चर्य के सीमा ना रहे। जवन कोईन के लकड़ी कतहीं हरियाइल ना रहे ओह लकड़ी में एगो मुलायम पात अंखुआइल रहुवे। ओह दिन कातिक के पूरनमासी रहे। एही वजह से हर साल कातिक सुदी पूरनमासी के गंगा नहान कइके भृगुमुनि के दरशन कइल आ जल चढवल़ा के महातम मानल जाला। एही चलते ददरी के मेला लागेला जवन दरदर मुनि के नाम पर बा।

विष्णु भगवान के निर्देशानुसार भृगु मुनि बलिया के दखिन गंगा किनारे तपस्या में लीन हो गइलन आ दरदर मुनि उनका सेवा में लाग गइलन। ओह घरी आजु के बलिया से नव दस किलोमीटर दखिन पर गंगा बहत रहली। धीरे ध ीरे गंगा का कटान से बलिया उत्तर का तरफ हटत गइल। अभी के बलिया तीसरा जगहा पर बसल बा। एह क्षेत्र के भृगु क्षेत्र कहल जाला आ कातिक पूरनमासी के एगो बड़हन मेला ददरी मेला के नाम से लागेला। एह मेला में दूर दूर से मरद मेहरारू आवेला लोग आ गंगा नहान अउर भृगु जी के दर्शन पूजन कइके आपन आपन मनोकामना पूरा करे खातिर मनौती मानेला लोग।

कातिक सुदी चतुर्दशी से अगहन बदी एकम तक भृगु बाबा के मंदिर में साधु सन्यासी के बड़हन जमावड़ा होला। ददरी मेला में जनावरन के बड़हन मेला लागेला जवना में दूर दूर से पशु व्यापारी आपन आपन पशु लेके जुटेले आ जिला जवार का अलावा दूर दूर से भी किननीहार आवेलन। प्रशासन एह मेला में परा ताकत से जुटेले। मेला में हर तरह के सामानन के दूकानन का अलावा सांस्कृतिक आ साहित्यिक आयोजन भी मजगर होला।

ग्राम : दिघार, बलिया - 277001

ललित निबन्ध

विकास माने हाफ पैंट

डा. दिनेश प्रसाद शर्मा

एह लेख के मथेला पढ़िके काहे चकचिहाइल बानीं ? काहे भकुआईल बानीं जी ? रउआ इहे नू सोचत बानीं कि भला इहो कवनों मथेला में मथेला भइल ? कहवां विकास आ कहवां हाफ पैंट ! एह दूनो के तालमेल कइसे बइठि गइल ? दूनों के गोटी एके जरे कइसे सेट हो गइल ? एह दूनों के एक दोसरा से कवनो तालमेल हइये नइखे त इन्हनीं के एके जरे रखला के मतलब ? घबड़ाईं जिन। हम फरिया फरिया के फरिआवत बानीं नू। दूनों के गोटी ए कजरे बइठावत बानीं नू।

कवनो जीव जब एह धरती पर जनम लेला त ऊ आपन पूरा जिनिगी के लम्बाई चौड़ाई के सभसे छोटहन रूप में रहेला। जइसे जइसे समय बीतल जाला भा ई कहीं कि ऊ जीव आपन उमिर जीअतजाला ओइसे ओइसे ओकर लम्बाई चौड़ाई बढ़त जाला। प्रकृति के ई अइसन ना नियम बा जेकरा के नकारल ना जा सकेला। हं, ई हो सकेला कि कुछ खास जीव के बढ़े के हिसाब किताब कवनों खास उमिर पर जा के रुकि जाय आ कुछ के ता जिनिगी चलत रहे। हमरा आजु तले ई सुने में ना आईल कि एह धरती प कवनों जीव अइसनो बा जवन जनम के बेरा आपन जिनिगी के पूरा लम्बाई चौड़ाई में रहे आ जइसे जइसे ओकर उमिर बढ़त गइल ओइसे ओइसे ओकर लम्बाई चौड़ाई घटत घटत एकदम सोना पर पहुंचि गइल। अइसे त एह धरती प एक से एक जीव पटाइल पड़ल बाड़ें। कुछ हमनी के लम्बाई चौड़ाई से कई गुना जादे बड़, त कुछ अइसनों जवना के खुला आंखि से देखलो ना जा सकेला। एहसे अगर प्रकृति अपना गरभ में ओइसनको जीव के रखले होखे जवन उमिर के साथ अपना लम्बाई चौड़ाई में घटत जाला त इ हमरा जानकारी के बाहिर के बाति बा।

एह धरती प के सभसे अजूबा जीव आदमी ह। ऊ अपना आप के अपना कारनामा से दोसर दोसर जीव से एकदम अलगा साबित क देला। मानव समाज में जब कवनों लईका जनम लेला त ओकरा के खाली एगो लंगोटी आपन खास जगह के तोपे खातिर पहिरावल जाला। ओहघरी ऊ अपना जिनिगी के सभले छोट लम्बाई चौड़ाई में रहेला। जइसे जइसे ऊ लइका आपन उमिर बितावल शुरू करेला ओकरा लम्बाई चौड़ाई के अनुपात में ओकरा लंगोटियो के लम्बाई चौड़ाई बढ़त जाला। ऊ लंगोटी अब चड्ढी के रुप ले लेले रहेला। फेनु उहे चड्ढी हाफ पैन्ट का रुप ध के एगो नया रुप में लउके ले। उहे लइका जब जवानी के देहरी प आपन गोड़ ध देला, फुल पैन्ट भा पाजामा के अपना चुकल रहेला। जइसे जइसे आदमी के उमिर में बढ़ोतरी होला ओइसे ओइसे देह के आकार के संगे संगे ओकरा देहि के बहतरो में बढ़ोतरी होत जाला।

लइका जबसे किशोरावस्था में आ जाला ओही घरी से ऊ चाहेला कि ओकर टंगरी पूरा के पूरा तोपाइल रहो। ऊ भरसक एही फेर में रहेला कि ओकर टंगड़ी एड़ी के उपर उघार मत लउके। एकरा खातिर ऊ फुल पैन्ट भा पाजामा अपनावेला। लइकाईं में ऊ एह बाति प कवनो खास धेयान ना दे काहे कि ओहघरी ले ओकरा दिमाग में ओतना चरफर ना भइल रहेला। ओह घरी ओकरा में सोचे समुझे के अतना ताकत ना रहेला तबो ऊ अपना से उमिरदार आदमी के देखि के सीखे के कोसिस करत रहेला। जइसे जइसे ऊ बड़होत जाला, छोट से छोट बाति प धेयान देबे लागेला।लइकन के लइकाई वाला हरक्कत अगर बूढ़ भा सयान आदमी करे

लागेला त ई दोसर लोग के हजम ना होखे आ उनूका मुंह से बरबस निकल जाला कि का लइकभुड़भुड़ई कइले बाड़ ?

कुछे दिन पहिले के बाति ह। हमनी के देस में पुलिस डिपाट में सिपाही जी लोग के हाफपैन्ट पहिन के डिउटी करे के पड़त रहे। कपार प के बार एकदम सन हो गइल बाकि उनूका डिउटी में फुलपैन्ट पहिने के इजाजत ना रहे। ना जाने सरकार के दिमागी कारखाना में कवन अइसन फारमूला तइयार भइल कि अू उनुका लोगन के हाफपैन्ट के जमानत जब्त क के फुलपैन्ट पहिरे के फरमान जारी क दिहलस। कुछ खास बाति त जरूरे होखी। हमरा त इहे बुझाला कि सरकार के बूझला इ पसन ना पड़ल कि बूढ़ बूढ़ सिपाही हाफपैन्ट पहिर के आध उघार हालत में आपन डिउटी करे। इनिका लोग के अपना डिउटी का समय में हरेक किसिम के आदमी से पाला पड़ेला।जवना में लइका सयान मरद मेहरारू सभे रहेलन। सभका बीच में सिपाही जी के हाफपैन्ट में घूमल भला नीक कइसे कहाई ?

ई सभ बाति त मरदन के भइल। अगर मेहरारूअन प नजर ना फेरल जाइ त ई उन्हनीं का संगे सरासर अन्याय होखी। काहे कि हमरा देस में मरद मेहरारू दूनो के बराबर के अधिकार मिलल बा। अगर ओह लोग का बारे में कुछ ना कहाई त ई ओह लोग के अधिकार के हनन होखी। हमरा कवनो अधिकार नइखे बनत कि सरकार से मिलल ओह लोग के सरकारी अधिकार के नजरअंदाज करीं भा ओकर मजाक उड़ाईं।

लइकी जब नन्ही चुकी रहेले त चड्ढी आ फराक में समेटाइल बटोराइल रहेले। जेंव जेंव अू बढ़त जाले ओकरा प देह दिखावन के सीमा, जवन हमनी के समाज तय कइले बा, लागि जाले। अू खाली आपन एड़ी आ मूड़ी उघार राि ख सकेले, उहो हिन्दू धरम के मोताबिक। मुसलमानी धरम के मोताबिक ओकरा आपन मूड़ियो तोप के राखे के रिवाज बा। लइकी जखनी सयान होके बिआह के बन्हन में बन्हा जाले त ओकरा आपन संउसे देहि लोग का नजर से बचा के राखे के पड़ेला। यानि की पूरा के पूरा देहि कपड़ा से तोपाइल।

खैर इ त हमनी के देस के संस्कृति ह, सभ्यता ह। जेकरा के हमनी के अपना पुरखा पुरनिया के दिहल तोहफा के रुप में अपनवले बानीं जा आ एही में आपन बड़प्पन बुझिलां जा। बर्व महसूस करींला जा। बाकिर नयका पीढ़ी अब लकीर के फकीर बनल आ अपना पुरखा पुरनिया केबतावल राहि प चले में आनाकानी करत बा, पगहा तुड़ावत बा।

विकास के मतलबे होला आगे मुंहे बढ़ल। विकास के इ माने अब आन बेर के हो गइल। एह घरी एकर माने साफे बदल गइल। अब विकास के माने पाछे हटल, बड़हन से छोटहन रुप धइल हो गइल बा।

हमनी के पुरखा पुरनिया पहिले नदी तालाब के पानी पीअत रहे। बाकिर जइसे जइसे उनुका लोग के दिमाग के विकास भइल भा इ कहीं कि इनिका लोग के अकिल के केंवाड़ी तनी फांफर भइल, इ लोग ओह नदी तालाब के पानी समेटि के कुईंया में क दीहल आ लागल ओकरे पानी धोंके। अउरी विकास भइल आ कुईंया से ना फरिआइल त ओह कुईंया के पानी के लोग चापाकल में ढूका दीहल आ ओकरे से पानी पीअे लागल। विकास के रफ्तार रूकल ना, चलत रहल। चापाकल के पानी आउरी पातर पाइप में ढूकि के टंकी में हेलि गइल। अतना के बाद लोग सोचल कि चल अब काम फरिआ गइल। बाकिर ना।इनिका लोगन का दिमाग का खूराफाती कारखाना में डिजाइन डिजाइन के फारमूला तइयार होत रहल आ अू पानी दे खते देखत दीया वाला जिन्न लेखा बोतल में हेलि गइल आ फ्रीज के राहि पकड़ि लिहलस। अतनो प लोग के संतोष ना भइल। लोग सोंचल कि पानी खातिर फ्रीज

के दन्तजाम कहां कहां होखी ? एहसे लोग पानी के पाउच में बन्द क के बगली में, झोरा में, अटैची में लेके चले लागल ताकि जब मन करी, जहवां मन करी, ओहिजे सरकारी दारू के पाउच लेखा दांते नोचि के घटाघट घटक जाइब, झुराइल देहि तरि हो जाइ, मन हरिअर हो जाइ, ओठ प के फेंफड़ी झुरा जाइ।

रउआ सभे अब इहे सोचत होखब कि ई हंसुआ के बिआह में खुरपी के गीत काहे गावे लगलन ? बकत रहलन कुछ आ बके लगलन कुछ अउर। बतकही बतकूचन होति रहे फुल आ हाफ पैन्ट के। एह में कुईंया तालाब, टंकी पाउच इ सभ केने से जहुआइल आके दाल भाति में अूंट के ठेहुन लेखा लउके लगलन स ? तनी सा सबुर राखीं। तनी करेजा कड़ा कइले रहीं। मरद मानुख के अकुताई ना सोहाय। ठहरीं, हमरा के तनी ई सभन के जवरिया लेबे दींही। रउआ आंखि के सोझा एकएक गो बाति परत दर परत खुलत चल जाई।

हं, त हम कहत रहीं कि आदमी सयान भइला प आपन संउसे देहि तोपि लेबे के चाहेला। जमाना बदल गइल। अब त लोग आपन संउसे टंगरी तोपे में अंउजाये लागत बा। पहिले केहू के मुंह तोप दिआत रहे तब अू उजबुजात रहे। अब अू टंगरिये तोपे मेंउजबुजाये लागत बा। आदमी का विकास का संगे जइसे पानी आपन रुप आकार बदलत चलि गइल ओसहीं आदमी के कपड़ो रुप आकार बदलत चलि गइल। जइसे जइसे पानी के आकार छोट होत गइल ओइसहीं आदमी अपना कपड़ो के लम्बाई चौड़ाई छोट करत चलि गइल।

लइका से लेके सयान, बूढ़ से लेके जवान सभे आपन विकसित रुप के लोग के सोझा परोस रहल बा। विकसित समाज में अविकसित रहल विकास के नजरिया से अनुचित कहाई, उचित ना। मरद आ मेहरारू के भारतीय संविधान से मिलल बरोबरी के अधिकार के उपयोग आ उपभोग करत जनानी समुदाय के सदस्या लोग अपना आप के एकरा से बरी ना क के मरदाना समुदाय के सदस्यन जवरे डेग से डेग मिलावत चलि रहल बा। मरदानी डिपाट हाफपैन्ट में आ चुकल बा त जनानियो डिपाट के लोग आपन पूरा ड्रेस के हाफ क के स्कर्ट में बदलि के आपन अधिकार के उपयोग आ उपभोग करि रहल बा। जहवां बाति बरोबरि के रहेला ओहिजा भेदभाव नीक ना हो खे। एही से जनाना डिपाट के लोग मरदाना डिपाट से पाछा नइखे रहे के चाहत।

पैन्ट के पहिला अवस्था जवन आदमी के सयान भइला प फुलपैन्ट रहे तवन विकास के दोसरा खेंड़ी प हाफपैन्ट का रुप में आ गइल बा। तीसरका खेंड़ी प जब चंहुपि त चड्ढी भा लंगोटी का रुप में लउकी। चउथा खेंड़ी प चहुंप के ई कवना रुप में लउकी ? ई त रउरा खुदे समुझि सकत बानीं। एकरा बारे में रउरा हमरा से जादे बताइब भा समुझाइब। काहे कि रउओ एही विकसित देस के विकसित समाज के विकसित दिमाग के विकसित आदमी बानीं। हाफपैन्ट पहिन के चलीं। फुलपैन्ट मे काहे अझुराइल बानीं ? तनी उघारि के चलीं। तनी हवा लागे दींही ना त ..... !

अनाईठ, प्रसाद पेपर वर्क्स लगे,
भोजपुर - 802 301

कविता

बाटे क दिन के ई जिनिगी

डा. बृजेन्द्र सिंह 'बैरागी'

कशमीर से कन्याकुमारी तक हई देखीं,
होत बाटे पाप अपराध रोज जघन्य जी।
खात बाटे अदमी के अदमिये अब देखिं,
करताटे कुकरम धुआंधार ई अक्षम्य जी।

कहताटे शौक से सीना तानि अदिमी ई,
बा धरम ईमान सत्य प्रेम अब अमान्य जी।
जीओ चाहे मरो अब अदिमिअत भागि से,
प्रेम के पुजारी बाड़न ईहवां नगण्य जी।

दिनों दिन बढ़त बाटे गिनति असुरवन के,
परंम के सजात बाटे चितवा असंख्य जी।
मान स्वाभिमान अब बचाईं लींजा हिन्द के,
परेम के जलाई जोति घर घर अनन्य जी।

परेम से रंगाइल रंग में बसेलन सुदामाकृष्ण,
नानक, कबीर, बुद्ध, सूर,तुलसी, चैतन्य जी।
पशु पक्षी पेंड़ अउर पहाड़ के सुनाम सुनीं,
होई जाई भारत वैकुण्ठ धन्य धान्य जी।

शान्ति अहिंसा अउरी प्रेम के पढ़ाईं पाठ,
कशमीर से कन्याकुमारी तक एकरम्य जी।
कहेलन बैरागी विचार करीं भाई जी,
बाटे कई दिन के ई जिनिगी सुरम्य जी।

आदर्श नगर, सागरपाली, बलिया- 277506

कविता

मगन किसान बाड़ें

शम्भु नाथ उपाध्याय

मगन किसान बाड़ें, हासिल निहारीं।

गदराइल मटर सरसो, तीसी चनवा फुलाइल,
रंग बिरंगा खेत देखिके,
खेतिहर बा अगराइल।
हंसेला किसानवां, सोचेला आपना मनवां,
असों नाहीं रही बड़की बंचिया कुंआरी,
मगन किसान बाड़ें, हासिल निहारीं।

चनवा दे दी साहू के करजा,
मटरा खाद के खरचा,
घरवाली के समुझाइब,
मति करिहे तू चरचा।
गेंहुआ खिआदी संउसे बराती,
तेल के खरचा सरसउवा सम्हारी,
मगन किसान बाड़ें, हासिल निहारीं।

जउवा सभ लरिकन के पाली,
दालि बनि लेतरी के,
बा अभाग, धनिआ का देखीहें
सपना देवपरी के ?
गुरवा बिकाई, पगरी रंगाई,
धनिया के बेसाहबी छापलिसारी,
मगन किसान बाड़ें, हासिल निहारीं।
बाछावा देके करबी निहोरा,
रुसल हित मनाईबि,
हं भगवान आस के पूरव..,
हम परसाद चढ़ाइबि।
पुरइबि सपनवां, चहकी अंगनवा,
डोलि चढ़ि जा दिन दुलहा अईहें दुआरी।
मगन किसान बाड़ें, हासिल निहारीं।

तिखमपुर, बलिया - 277 001

कविता

लोरी

सुरेश कांटक

चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला,
राजा जी का राज में पड़ल बाटे पाला।

तेल चढ़ल ताड़ प, आकास में मसाला,
अदिमी बेकार, रोजगार ना भेंटाला।
टोपिया बा टप प, किसान जहर खाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

चुप रह.., चुप रह.., मिलि गइल बालू,
सभ धन घोंटि गइल कालू जी के भालू।
हमनी के गुदड़ी, आ उनुका दोसाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

सउसे जिनिगिया विपतिये में कटल,
अणु बम छोड़े के बेचैन बाड़े पटल।
कहेले कि राम दोसर, दोसर हवे आला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

छम छम नाचेले मंहगिया बजार में,
नमरी के चीझुआ बेचात बा हजारमें।
कवन दो मुदईया लगावे मकड़जाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

चुप रह.., चुप रह.., काल्हु भात खईब,
ढेर नधिअइब त मार लात खइब।
नेतवन के पूत मरे, कइलन स घोटाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

परपी भगवनवा के आंखि बाटे फूटल,
हमनी के मूसरे से सीखले बा कूटल।
पछ करे पड़वन के पाके फूल माला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

दिनों दिन बढ़ता, जे काला धन खाला,
बइठल निठाला, हमरा पंउवा में छाला।
पेटवा प पाला डाले, मुंहवा प ताला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

कांटक कहेले ओकर आका बाड़ें काका,
अपना सवादे बन करे नाका नाका।
लेबे खातिर धरती, मचवले बाटे हाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

जलदी सयान होख.., नाग के नचईह..,
आरे मोरे बाबू एह बाग के बचईह..।
दईंता पाताल के ले जात बाटे खाला,
चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला।

चुप रह.., चुप रह.., आरे मोरे लाला,
राजा जी का राज में पड़ल बाटे पाला।

कांट, बक्सर - 802 112

कविता

गीत

देव कुमार सिंह

एक

जिअे के जिअेला कुकुरो सियार भाईजी,
खालि खाअे खातिर जिनिगी धिक्कार भाईजी।

जब पुण्य अनधा जुटेला, नर तन तबहीं मिलेला,
सेवा तप कर... उपकार भाईजी,
जिअे के जिअेला कुकुरो सियार भाईजी।

ई जग हवे अेगो डेरा, स्थायी ना हवे बसेरा,
काहे करेल.. तकरार भाईजी,
जिअे के जिअेला कुकुरो सियार भाईजी।

जे जिनिगी पेट पोसे में गंववावल,
देशवा के जे शान ना बढ़ावल,
ओकर जिनिगी धरतिया पर भार भाईजी,
जिअे के जिअेला कुकुरो सियार भाईजी।

आपस के भेद सब मिटाव..,
सबके गलेसे लगाव..,
बांट.. दंनिया में सुख शान्ति पयार भाईजी,
जिअे के जिअेलाकुकुरो सियार भाईजी।

भूखड़ा के भोजन कराव..,
नंगा के वस्त्र पहिराव..,
तबे होई तहार जिनिगी साकार भाईजी,
जिअे के जिअेला कुकुरो सियार भाईजी।

दो

कब बीति दुख के अन्हरिया हो रामा,
कब होई देशवा में भोर ?
सुख के सुरुज कब होइहें उदितवा,
कब होई इहवां अंजोर ?

देशवा आजाद भईल, अइसन सुनाइल सबके,
सुखी गांव नगर होई,
अइसन बुझाइल सबके।
पड़ल मेहनत के अंखिया में माड़ा...,
ढर ढर ढरकेला लोर,
कब बीति दुख के अन्हरिया हो रामा,
कब होई देशवा में भोर ?

आकि ई आजादी बबुआ,
टोपी में भुलाइ गइल,
आकि सब सेठवा तिजोरी में लुकाइ लिहलें,
आकि उहो बाड़े अभी लरिका गोदेलवा,
चललें ना झोपड़ी का ओर,
कब बीति दुख के अन्हरिया हो रामा,
कब होई देशवा में भोर ?

आकि इ मगन बाड़ें कुरुसी का खेल में,
आकि नौकरशाही इनके
डालि दिहलस जेली में,
अंखिया फोड़ाइ गइल इनका जनमते,
आकि भइलें ना अभी अंखफोर,
कब बीति दुख के अन्हरिया हो रामा,
कब होई देशवा में भोर ?

आकि पनरह अगस्त रहे सुनर सपनवा,
अधनीनीये में भइल सुरुज दरसनवा,
उरुआ बोले, चमगादड़ उड़ेला,
अभी बाटे अन्हार खूबे घनघोर,
कब बीति दुख के अन्हरिया हो रामा,
कब होई देशवा में भोर ?

प्रवक्ता, इन्टर कालेज, जमालपुर

लेख

के ह लक्ष्मी

अजय कुमार काश्यप

सृष्टि से पहिले श्रीकृष्ण के वाम भाग से लक्ष्मी के आविर्भाव भइल रहे। लक्ष्मी बड़ा सुन्दर रहली। जनम का साथे ऊ दू रुप में बंट गइली। ई दूनो रुप अवस्था, आकार, भूषण, सुन्दरता, रंग वगैरह सबमें एक समान रहे। एगो के नाम लक्ष्मी पड़ल आ दोसरका के राधिका। ई दूनो रुप के अभिलाषा पुरावे खातिर श्रीकुष्ण दक्षिणांश से द्विभुज आ वामांश से चतुर्भुज रुप धारण कइनी। द्विभुज रुप राधाकांत आ चतुर्भुज रुप नारायण भइनी। राधाकान्त राधा आ गोपियन संगे ओहिजे रह गइनी आ नारायण ल क्ष्मी संगे बैकुण्ठ चल गइनी।

लक्ष्मीजी नारायण के अपना वश में कर के सब रमणियन में प्रधान भ गइली। ई लक्ष्मी स्वर्ग में इन्द्र के संपतिरुपिणी स्वर्गलक्ष्मी के रुप में, पाताल आ मृत्युलोक के राजा के पास राजलक्ष्मी का रुप में, गृहस्थ का पास गृहलक्ष्मी का रुप में, चन्द्र, सूर्य, अलंकार, फल, रत्न, महारानी, अन्न, वस्त्र, देवप्रतिमा, मंगल, घर, हीरा, चन्दन, नूतन,मेघ आदि सबमें शोभारुप में विद्यमान रहेली। लक्ष्मी देवी शोभा के आधार हईं। जवना स्थान पर लक्ष्मी ना रहस उ स्थान शोभाशून्य ह..।

एक बेरि के बाति ह..। महर्षि दुर्वासा बैकुण्ठ से कैलाश जात रहीं। देवराज इन्द्र बहुत आदर से प्रणाम कइनी। दुर्वासा ऋषि खुश होके पारिजात के फूलन के माला इन्द्र के दीहलें बाकिर अहंकार में डूबल इन्द्र ओह माला के अपना हाथी ऐरावत का माथ प ध दीहलन। ए ऐरावत ओह माला के जमीन प फेंक दिहलस। ई सब देख के दुर्वासा जी के खीस के पार ना रहल आ इन्द्र के सराप दिहलन कि जा तहार अहंकार के जड़ लक्ष्मी तहरा के छोड़ दीही। संगही उहां का ईहो कहनी कि जवना माथे ई माला पड़ल ह.. होकरे पूजा सबसे पहिले होई।

दुर्वासा का सराप का चलते लक्ष्मीजी इन्द्रलोक छोड़ के चल गइली। लक्ष्मीहीन इन्द्र देवतालोग के साथ ले के तब ब्रह्मा जी का शरण में पंहुचलन। ब्रह्मा जी ओह लोग के ले के विष्णुजी का लगे गइलन आ सब किस्सा कहलन। पूरा बाति सुन के विष्णुजी देवता लोग के सलाह दिहनी कि चिन्ता छोड़.. जा। तहरा लोगन के लक्ष्मी फेरु मिलिहन। विष्णुजी ओहलोग के इहो बतलवनी कि लक्ष्मी कहां कहां रहेली आ कहवां ना टिकस। एकरा बाद उहांका लक्ष्मीजी के आदेश दीहनी कि जा समुद्र में जनम ल। ब्रह्मा जी से कहनी कि रउआ सभ देवता लोग का संगे समुद्र मह के ल क्ष्मीजी के उद्धार करे के कोशिश करीं।

बादमें समुद्र मथाईल आ लक्ष्मीजी ओह मंथन में प्रकट भइली। एहतरे लक्ष्मीजी के उद्धार भईल आ विष्णु भगवान फरु उनुका के अपना लिहलन। ईहे लक्ष्मी जी के कहानी ह।

अनुवादक : - मुकेश
अभिनन्दन कुटीर, सतनी सराय,
बड़ी मठिया, बलिया - 277 001